वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 40	Year 4	Volume 4	January 2016 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 2

विचार

अच्छाई अभी भी पसन्द की जाती है। ईमानदार लोगों को सभी आदर से याद करते है।

हमारे देश के भूतपूर्व न्यायधीश श्री शेरनाज कपाडिया का अभी निधन हुआ तो भारत के मुख्य समाचार पत्रों ने बहुत आदर के साथ उनके जीवन की बातों का विवरण दिया, कारण श्री शेरनाज कपाडिया, जो कि पारसी थे, बहुत ही ईमानदार व्यक्ति थे। वे किस कदर अपने जीवन में सच्चाई और ईमानदारी रखना चाहते थे यह इस छोटी सी घटना से सामने आ जाता है---जब वह दिल्ली में मुख्य न्यायधीश थे तो उनके ऐक रिश्तेदार ने उन्हे अपने घर चाय पर बुलाया। श्री कपाडिया इस बात पर राजी हुये कि वह सिर्फ 10 मिन्ट के लिये ही वहां रहेंगे और इस दौरान उनके ओहदे और व्यवसाय से सम्बन्धित कोई बात नहीं होगी। उन्होने अपना जीवन एक फोरथ क्लास पद कर्मचारी, जिस श्रेणी में कि चपड़ासी भी आतें है, शुरू कर भारत देश के मुख्य न्यायधीश बने। यह इस बात को भी बताता है कि आप ईमानदार रहते हुये भी उपर पहुंच सकते है।

हम ईमानदार और निस्वार्थ सेवियों को उनके जाने के बाद भी बहुत आदर से देखते है, इसका एक उदाहरण और अभी सामने आया जस्टिस श्री प्रेम चन्द पण्डित को देखने का पहला मौका मुझे 90's के दशक में मिला। वह आर्य समाज सैक्टर–7 के संरक्षक थे। मैं इतना ही कहुंगा कि उन्होने आर्य समाज सैक्टर–7को एक नई दिशा दी थी। आहिस्ता आहिस्ता मुझे पता लगा कि उस आर्य समाज में साधना आश्रम बनाने का जो विचार था वह भी उन्ही का था। यही नहीं चण्डीगढ़ स्थित आर्य समाजों और डी ए वी संस्थाओं को उनका निस्वार्थ योगदान मिलता रहता। कुछ समय में ही मुझे उनके जीवन के दूसरे पहलुओं का पता लगा जो कि उनको मनुष्यों की श्रेणी से उठाकर देवताओं में ले आता है। वे क्या थे यह आपको केरल हाई कोर्ट के भूतपूर्व मुख्य न्यायधीश जस्टिस श्री जवाहर लाल गुप्ता के

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

साथ दिये लेख से कहीं बेहतर पता लग सकता है। मेरे जीवन की एक घटना है जो मैं यहां लिख रहां हूं।

मैं आर्य समाज सैक्टर –7 आता था पर मेरी उन से कभी बात नहीं हुई थी हां इतना पता था कि वह सेवा निवृत न्यायधीश हैं। एक बार मुझे किसी व्यक्ति ने किसी मामले में बहुत बड़ा धोखा दे दिया। उस पर कानूनी कारवाई करना आवश्यक था, मैं किसी वकील को नहीं जानता था। एक दिन आर्य समाज का सत्संग खत्म हुआ तो मैने उन्हें संक्षिप्त में अपनी कहानी बता दी। उसी समय उन्होने एक कागज पर एक वकील के नाम पत्र लिख दिया और मुझे उन से मिलने को कहा। मैं अगले दिन वकील साहब को मिला और पत्र दिखाया। स्वभाविक तौर पर मैने वकील साहब जिनका नाम श्री इस्सार था, उनकी फीस पूछी। श्री इस्सार का जवाब ही जस्टिस श्री पण्डित के बारे में बताता है ––'जस्टिस श्री पण्डित ने मुझे सेवा का अवसर दिया यह मेरी फीस से कहीं उपर है। मेरे बहुत कहने पर भी उन्होने फीस न कोई पेपर फाईल करने का खर्चा लिया।

2006 में 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ था और आज ठीक 10 वर्ष बाद उनकी याद में आर्य समाज सैक्टर–7 ने एक हाल बनाने का निर्णय लिया है । काम प्रारम्भ भी हो गया है। यह इस बात को बताता है कि अच्छे व्यक्ति कहीं भी हो अपने अच्छे कार्य और चरित्र के लिये याद किये जाते है। बहुत से व्यक्ति अपार धन दौलत छोड़ कर जाते हैं उनको याद करते मैने कम लोगों को ही देखा।

यहां मुझे महात्मा गांधी की एक बात याद आती है––– अच्छे व्यक्तियों का जीवन ही ग्रन्थ होता है। आप किताबें न पढ़ सकें तो कोई बात नहीं यह पूर्ती आप श्री शेरनाज कपाडिया और श्री पंडित जैसे व्यक्तियों के जीवन से कर सकते है।

जसटिस श्री जवाहर जाल ने बहुत सही कहा –– Some are good some are great, but he was one of the few who was good and great both. Today, he may not be there in flesh and blood. He shall live in the hearts of the people for a long time.

if=dk esa fn;s x;s fopkjksa ds fy, ys[kd Lo;a ftEesokj gSA ys[kdksa ds VsyhQksu u- fn, x, gS U;kf;d ekeyksa ds fy, p.Mhx<+ ds U;k;y; ekU; gSA

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

Adieu! My Lord

Late Justice J. L. Gupta

HERE was a man! A persuasive lawyer. A just Judge. Above all, a gentleman. He walked alone through the labyrinths of life. He toiled each day of his existence. He completed 93 milestones on the road of life. While walking towards the 94th he decided to leave this land of the dying. Unfortunately, Justice Prem Chand Pandit is no more in our midst.

Born on St. Valentine's Day, even his name spelt and symbolized love. A product of the DAV institutions, he lived by the principles enunciated by the great founder. He was generous and gracious, humane and tender. For him, labour was the sweetest of all pleasures. Idleness the cradle of all disease. As in geometry, so in life, a straight path was his only way to reach the goal.

As in life, so in law, he combined accuracy, comprehension, diligence, hard work with patience to plead for the protection of the innocent and the punishment of the guilty. Eloquence and impassioned oratory gave him an edge over his adversaries. He had a vast practice and was elevated to the Bench more than four decades back on March 4, 1960.

He was tailor-made for the job. Even the dull moments were enlivened by an inexhaustible fund of anecdotes. The misery of the litigants on opposite sides in his court was alleviated by his compassion. He always held the scales even. Sturdy independence, a strong mind, a great heart, two ready hands were his contributions to the high office. As a Judge, he was a tall man who lived "above the fog in public duty and in private thinking".

He never deviated from the path of righteousness, but guarded his honour zealously. In May, 1974, he was unfortunately superseded for the office of the Chief Justice. The chastity of his honour felt the stain of supersession. He resigned without delay or demur. And then, he did not accept any job. The "lure of office" never tempted him. The privileges of office could not win him over. He hated the thought of a retired judge being seen in the corridors of the secretariat seeking favours from those whom he had once judged. Probity and unimpeachable integrity were his constant companions.

More than everything else, he was a virtuous man.

To him, a drink was a "man's way to the devil". Punctilious about punctuality, for him it was always a minute too soon but never a minute too late.

Crowns are always stuffed with stones. The passage to the throne is thorny. Justice Pandit walked on this passage with grace and wore the crown with glory. Some are good some are great, but he was one of the few who are good and great.

Today, he may not be there in flesh and blood. He shall live in the hearts of the people. For a long time.

The writer himself was a highly respectable Judge and retired as the Chief Justice of Kerala High Court.

रोचक वार्ता अधिक प्रभावशाली हो सकती है

नीला सूद

प्रोफैसर पुरी जिनके लेख हमारी पत्रिका में अक्सर छपते है, पंजाब विश्व विद्यालय के सेवानिवृत physics के प्रोफैसर हैं और 80 वर्ष से उपर उनकी आयु है। जब भी उनकी मेल हमें आती है,मैं और मेरी पति उसे कम से कम पांच बार पढ़ते है। कारण, उनके लिखने की अनूठी शैली, जो कि दूसरों का मन जीत लेती है। मैं नहीं जानती ऐसी लिखने की शैली या बोलने की शैली भगवान की देन होती है या प्रयत्न कर बनानी पढ़ती है, पर एक बात अवश्य है जिस के पास भी है वह दूसरों से मीलों आगे है और जिन के पास भी इस की कमी होती है वह विद्वान, पडिंत, बहुत बड़े बुद्धजीवी, होशियार होने के बावजूद भी अपने जीवन में काफी पीछे रह जाते हैं और वह उतना आगे नहीं आ पाते जितना की आ सकते थे।

प्रोफैसर साहब की पत्नि ने मुझे एक बहुत पुरानी बात बताई –– बात 1955 के लगभग की है। –– ''हमारी शादी माता पिता द्वारा निश्चित की गई थी। शादी के बाद मैं प्रोफैसर साहब के पास जाने से कतराती थी, ख्याल आता कैसे किसी अन्जान व्यक्ति के पास जाऊ। खैर इसी दौरान प्रोफैसर साहब को अमेरिका आगे पढ़ाई के लिये जाना पढ़ा। वे वहां से पत्र लिखते और इन पत्रों ने मुझे प्यार से सींचना शुरू कर दिया और इस तरह मैं उनको समर्पित हो गई और इन्तजार करने लगी। हां सत्य कहा है, लिखने और बोलने की कला दूसरों को आप का गुलाम बना देती है।''

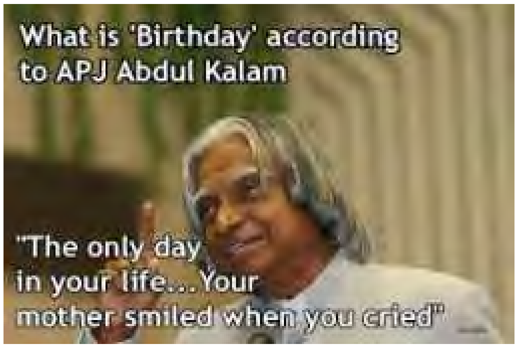

यहां मुझे एक स्वामी जी की याद आती है। मुझे भी उनके उपदेश सुनने का मौका मिला। उपदेश धार्मिक होते थे पर स्वामी जी अपनी वाकपटुता से ऐसा रंग ला देते थे कि दिल करता था उनका भाषण खत्म ही न हो।

एक दिन उनके भाषण का विषय था। हम सत्य तो बोले पर उस में माधुर्य हो। वह जानते थे कि दृष्टांत बात समझाने का सब से अच्छा ढ़ग है। उन्होते बताया––बात उस समय की है जब मोबाईल आदि नहीं होते थे एक बार एक व्यक्ति कुछ दिनों के लिये बाहर जा रहा था । जाते समय वह अपनी बिल्ली अपने पड़ोसी के सरंक्षण में छोड़ गया । बापिस आया तो पड़ोसी बोला–––हमें अफसोस है आपकी बिल्ली अपके पीछे मर गई। एक दो दिन बाद उन्होने उसे यह भी बता दिया कि मरी कैसे। एक दिन खाली समय में वह व्यक्ति उनके पास गया और जब देखा कि महौल अच्छा है तो बोला –––महाशय आप से एक बात कहनी है। बजाये इसके कि आप मुझे पहुंचते ही तपाक से यह सूचना देते कि आपकी बिल्ली अपके पीछे मर गई इसे थोड़ा दूसरे ढ़ंग से भी बता सकते थे –– जैसे कि गर्मी के मौसम में कड़क घूप में छत पर से कूद गई और गिर गई, चौटे आई, डाक्टर को दिखाया पर उसे वह भी बचा न सका। पड़ोसियों ने सुना और उसकी बात में कुछ तन्त देखा। अगली बार जब वह व्यक्ति बाहर जाने लगा तो अपने बूढ़े पिता को उनके संरक्षण में छोड़ गया। जब वापिस आया और अपने पिता के बारे में पूछा तो पड़ोसी ने बड़े आराम से कहानी शुरू कर दी –– पिता जी छत पर घूप में बैठे थे ––

इसी तरह एक बार स्वामी जी बता रहे थे कि जो व्यक्ति सत्य बोलता है और अपने किये हुये वादे को निभाता है, उसकी विश्वसनियता और साख समाज में अलग ही बन जाती है। एक बार कोई सफल और नामी व्यापारी ने अपने बेटे को अपने साथ व्यापार में शामिल करने का निश्चय किया। व्यापार के नियम बताने के लिये पास बिठाया और बोला –– बेटा, एक अच्छे व्यापारी में दो गुण होते है। पहला ईमानदारी और दूसरा बुद्धिमता। किसी भी ग्राहक को दिया वायदा अवश्य निभाओ चाहे उसमें नुकसान ही क्यों न हो। पर बुद्धिमता इसी में है कि किसी को भी ऐसा वायदा न करो।

इसी तरह व्यक्ति के सौन्दर्य के बारे में समझाते हुये बोला –– व्यक्ति के गुण ही उसका वास्तविक सौन्दर्य होते हैं न कि शक्ल सूरत। उन्होने एक दृष्टांत बताया –– एक लड़का लड़की एक दूसरे की शक्ल सूरत पर मुग्ध हो गये और उन्होने आपस में शादी करने का निश्चय कर लिया। एक दिन जब लड़की ने देखा कि उसकी मां अच्छे मूड में है तो उस से बोली –– माँ मुझे एक लड़का इतना प्यार करता है वह दुनिया कि हर चीज मेरे पैरों तले लाने को तैयार है। मां ने सुना तो बोली –– मेरे बच्चे तेरे पैरों के तले तो आगे ही सब कुछ है। पर क्या वह तेरे सर ढकने के लिये छत का बन्दोबस्त कर सकता है।

एक बात स्पष्ट है कि वार्तालाप जिस में कि दूसरे को संदेश चला जाये और महौल भी मधुर बना रहे, अपने आप में एक गुण है और हमें जीवन में इसे लाने की कोशिश करते रहना चाहिये।

The Gold within you

Neela Sood

Those who have visited Bangkok might have seen a golden statue of the Buddha that stands in the Temple of Wat Traimit. It is said that this 3 meters tall statue made of 5.5 tonnes gold was made about five hundred years back. Being precious and unique it created news in the neighboring country Burma too, who cast their covetous eyes on it. Around this period, when the Burmese army conquered Thailand, they decided to carry the statue away. Smelling their ulterior motives, the priests used a trick to save the unique and precious statue. They carefully covered the entire statue with clay. The invaders arrived but searched in vain. It remained wrapped in clay for the next five centuries and even the new Thai generation did not know that it was of gold.

A few decades back the government decided to lay a new road which called for relocating the temple. Because of its high spiritual value, the statue was to be reinstated. However, when the people tried to lift it, they failed. So they dug around its base and loaded it on to a trailer with the help of a crane.

While lowering the statue at the new place, they heard a crack. But, it was already late in the evening so they decided to leave it in the trailer and assess the damage the next day. But it rained incessantly for next two days. After the rain had subsided when they went to the trolley, they were astonished to find a gold statue of Buddha radiating with bright light. Actually, rain had washed off the entire clay.

Point is if we have a goodness, continue to spread it with your acts. Don't bother for the recognition.

One day your goodness will get revealed by itself when the fragrance of your acts makes peoples take note of you. There is no need to beat drums about your good acts especially charity. Life of Mother Teresa is the burning example, she never craved for recognition but all honours continued to come to her even the sainthood and Nobel Prize.

Don't educate your children to be rich.

Educate them to be Happy.

So when they grow up they will know

the value of things not the price.

Editor

Wealth to wellbeing to wellness of all in the New Year

In the generation to which my parents belonged, not many were fortunate to see and experience materialistic wealth. Reason, families were not only big but unlike today extended also. One member of family earned and many depended upon him. Even meeting expenses of kitchen and ordinary clothes to cover the body was not always easy. Unlike today, one woolen coat could be used by all the brothers in the family. Partition of the country had further added to their cup of misery. Millions as refugees and migrants had to start from scratch. Things changed after 1970 and dramatically changed for better, after 1990 with better salaries, far better pension & retirement benefits and attractive land prices. Most of us moved from one small toilet for entire family in the corner of the house to attached washrooms with each room.

No one should be content with promoting his/her good only, on the contrary one should look for his/her good in promoting the good of all. One of the principles of Arya Samaj made by Swami Dayanand Saraswati

Quite justifiably, those who had not experienced wealth whole their lives, thought that their miseries were over, after all it is money which makes the mare go. It turned out to be an illusion in most of the cases. Even after rolling in wealth they are seen depressed with an inner vacuum in their lives. In a way, money could not solve all their problems.

But man by nature is a thinker unlike animals. People have started realizing that there is no use of the money which they can't enjoy. Many are choosing wellbeing over wealth accumulation. Living with purpose is getting more attention than making money. Therefore they are investing in health and well being. Focus is to uplift mind, body and soul. But, as wealth has its limitations likewise own wellness and wellbeing without linking it with the wellness of others has also its limitation. Therefore, in this New Year, aim should be-- from wealth to wellness and from own wellness to wellness of all. This leads to eternal happiness and creates a healthy society where everyone can live without fear. There can't be a greater curse than to live in fear and insecurity even after possessing everything. I salute the wisdom of great Rishi Dayanand Saraswati who while framing principles of Arya Samaj, way back in 1875 said: “We cannot be happy only by focusing on our own prosperity, our happiness lies in the prosperity of everyone in the society.”

Let us not worry what government is doing or what others with better earnings are doing. Let us try to do our bit with the money, intellect and wealth of experience we have.

सम्पादकिय

अच्छा हो सर्वोच न्यायालय के निर्णय से हिन्दु धर्म के ठेकेदार सबक लें

सर्वोच न्यायालय ने अपने निर्णय में कहा है कि हिन्दु धर्म सैंकड़ो सालों सें भारत देश में समय समय पर हुये सन्त, ऋिषियों और धार्मिक गुरूओं के अध्यात्मवाद को लेकर विचारों का एक समागम है जिसकी न तो दूसरे धर्मो की तरह कोई एक खास पुस्तक है, न ही दूसरे धर्मो की तरह कोई एक पर्वतक है जैसे की पैगम्बर साहिब न ही ईश्वर का सर्वमान्य रूप है और न ही सर्वमान्य कर्मकाण्ड है।

यदि आप भारत के हर कोने में घूम लें, उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तो निष्कर्श यही होगा कि जो अपने आप को मुसलमान नहीं कहता, ईसाई नहीं कहता, सिक्ख नहीं कहता, बोद्ध और जैन नहीं कहता या पारसी नहीं कहता वह हिन्दु है। हिन्दु होने के लिये यही बहुत है कि आप यह घोषणा कर दें कि मैं हिन्दु हूं। बाकी उसे हिन्दु कहने के लिये आप के पास कोई परिभाषा नहीं। मांस खाने वाले और शाकाहारी दोनों हिन्दु है, मांस खाने वालों में जो गाय का मांस खाते हैं वे भी हिन्दु है। निराकार ईश्वर को मानने वाला हिन्दु है तो मूर्ती पूजा करने वाला भी हिन्दु है। मूर्ती पूजा करने वालों के अनगिनत भगवान है बहुत से आपने सुने भी न होंगे। जो वेदों को मानता है वह भी हिन्दु है और जो वेदों को न मानकर दूसरे ग्रन्थों को मानता है जैसे की पुराण वह भी हिन्दु है। वेदों को भी सब अपने अपने ढंग से मानते है। उदाहरण के लिये जो मन्त्रों का अर्थ आर्य समाजी करते है दूसरे उनसे सहमत नहीं। उनके अपने ही अर्थ है। कोई संस्कृत को धर्म की भाषा मानते है उनका कहना है कि ईश्वर संस्कृत को छोड़कर और कोई भाषा नहीं समझता तो बहुत से दूसरी भाशाओं को मानते है। इंसान को ही ईश्वर मानते हैं तो कुछ मानते हैं इन्सान ईश्वर नहीं हो सकता। असंख्य देवता है। कई देवताओं को मांस, दारू भी परोसी जाती है।बहुत सारे ईश्वर को खुश करने के लिये पशुओं की बलि देते है तो दूसरे इसे पाप समझते है। दुनिया के दूसरे लोगों ने हवाई जहाज, कारे, हर रोग की दवाईयां बनाने में नाम कमाया तो हम हिन्दुओं ने तरह तरह के भगवान बनाने में सब रिकार्ड तोड़े।

ऐसी विभिन्नता में सर्वोच न्यायालय कां कहना कि हिन्दु धर्म सैंकड़ो सालों में भारत देश में समय समय पर व हुये सन्त, ऋिषियों और धार्मिक गुरूओं के अध्यात्मवाद को लेकर विचारों का एक समागम है तो गलत नहीं क्योंकि न तो दूसरे धर्मो की तरह कोई एक खास पुस्तक है, न ही दूसरे धर्मो की तरह कोई एक पर्वतक है न ही ईश्वर का सर्वमान्य रूप है और न ही सर्वमान्य कर्मकाण्ड है।

हा परं एक बात सही है जो आज का हिन्दु धर्म है वह पुरातन वैदिक धर्म का बिगड़ा रूप है जिसके लिये निम्न बातें जिम्मेवार हैं महाभारत के बाद किसी अच्छे राजा का अभाव जो कि इतने विशाल देश को जो कि अफगानीस्तान से लेकर इण्डोनेशिया, बाली जावा तक फैला हुआ था एक सूत्र में पिरो सकता। कम्बोदिया, बाली के मन्दिर इस वात का गवाह है। अगर एक शक्तिशाली राजा होता तो घर्म भी एक होता। जब हजारों लाखों राजा हो गये तो धर्म भी बहुत सारे हो गये। आचरणवहिन पण्डितो का वर्चस्व रहा जिन्होने वेदों के साथ खिलवाड़ खेला और आज भी खेल रहें है। संस्कृत भाषा के कुछ शब्द, चाहे ठीक या गलत, बोल लेना ही विद्वता का प्रतीक रहा जो कि आज भी है। उन्ही के कारण गलत जाति प्रथा और दूसरी समाजिक बुराईयों ने जन्म लिया, स्त्री का स्थान गिर गया, समाज जन्मआधार जातियों में बट गया, जो कि हमारे देश को सैंकड़ो साल पीछे ले गई ।

किसी खास समुदाय, जिसे आप ब्राहमण भी कह सकते है, धर्म और धार्मिक पुस्तकों पर पूरा वर्चस्व बना रखा है।

संस्कृत जो कि आम व्यक्ति की समझ से बाहर थी, धर्म की भाषा माना जाना, जिस कारण आम व्यक्ति धर्म के नजदीक ही नहीं जा सकता था और जो उसे स्वार्थी पण्डित बताते उसे

वह मानना पड़ता। आज भी हालत सुधरी नहीं है। विवाह जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर पडित जो मन्त्र बोलता है वे वर और वधू कहां समझते हैं, जब कि जरूरत इस बात की है कि वर और वधू समझे और बोलें, उस भाषा में जिसे वे समझते है। अभी कुछ साल पहले तक ही विवाह की चाबी इन पण्डितो के हाथ में होती थी। जिनकी कुण्डली नहीं मिलती थी या कोई दोष बता दिया जाता था उस जोड़ी की शादी ही नहीं होती थी।

एक हजार साल की गुलामी, जिसने शिक्षा को खत्त ही कर दिया था। हमें अंग्रेजों का धन्यवादी होना चाहिये जो कि शिक्षा को पुन भारत में लाये। ऐसी शिक्षा जो कि सब कि पहुंच मे है , चाहे नारी है या फिर दलित।

इतनी विभिन्नता के बावजूद भी कुछ बातें मैने देखी जो कि लगभग हर कोने में है।

ईश्वर की शिव के रू॰ में मान्यता। शिव के मन्दिर मैने लगभग हर जगह देश, विदेश में देखे। इसी तरह ईश्वर की विष्णु की मान्यता काफी है। हर जगह उनकी मूर्ती देखी जा सकती है। बोद्ध धर्म मानने वाले देश भी बुद्ध को विष्णु का अवतार मानते है।

अब ओइम और गायत्री मन्त्र की मान्यता भी फैल रही है। जो कि स्वामी दयानंद और आर्य समाज की देन है।

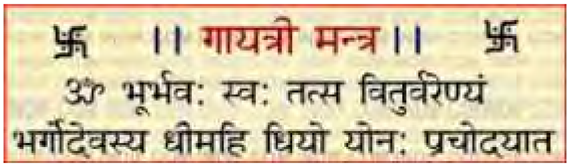

नमस्ते को अभिवादन का ढंग माना जा रहा है। यह भी स्वामी दयानंद और आर्य समाज की देन है।विदेश में जिस किसी को भी ऐसा लगे कि आप हिन्दु है वह नमस्ते कहेगा। मेरे साथ यह मुस्लिम देशों में अक्सर हुआ। मुश्किल यह है कि विदेशी तो नमस्ते कह कर बहुत प्रसन्न हैं , हमारी सरकार उसे नमस्कार बना रही है। वेदों की बात लोग कर रहें है पर वेदों को मानने का ढंग अपना अपना है। हां वेदों का संदेश सभी मतों और यहां तक कि दूसरे धर्मो में भी आप देखसकते है।।

दोनो सांई बाबों के कारण हिन्दु धर्म काफी हद तक सीमाओं से बाहर निकला है। उनको मानने वाले हर कोने में और देश विदेश में है।

ISCKON, RSS और ब्रहम कुमारी संस्था नें हिन्दु धर्म को फैलाने में काफी काम किया है। 36 देशों में RSS की शाखायें लगती है।आर्य समाज की भी अव्छी मान्यता हो सकती थी पर गुरूकुलों ने, संस्कृत और हिन्दी प्रमियों ने RSS के साथ मिलकर इस संस्था को RSS की शाखा बना दिया।

आर्य समाज ढंग से विवाह और दाह संस्कार को काफी मान्यता प्राप्त हो रही है।

हां कुछ बाते हैं जो कि इतनी विभिन्नता के बाद भी हिन्दुओं का जोड़े हुये है – 1. इस्लाम का खतरा।

2. हिन्दु है तो कम से कम भारत में तो मुख्य साम्प्रदाय है।

3. विदेश में रह रहे हिन्दुओं को विदेश में रहकर, जहां कि racial discrimination बहुत है, यह महसूस हो रहा है कि हिन्दु के रूप में अपनी पहचान रखना कितनी आवश्यक है।

हिन्दु धर्म का सब से बड़ा भात्रु

1. हां जी, हिन्दु धर्म का सब से बड़ा शत्रु इस्लाम या फिर ईसाई धर्म नहीं बल्कि हमारी जाति प्रथा है। अगर यह जड़ से खत्म हो जाती है तो हिन्दु धर्म को कोई खतरा नहीं।

2. खाने, पहरावे और भाषा को धर्म से जोड़ना। इस्लाम और ईसाई धर्म या फिर बोद्ध धर्म फैले ही इस लिये क्योंकि उन्होने धर्म को खाने, पहरावे और भाषा के साथ नहीं जोड़ा। जो भी खाने, पहरावे और भाषा के साथ हिन्दु धर्म को जोड़ते है वह हिन्दु धर्म के शत्रु है।

हिन्दु धर्म की सब से आसान पहचान

मेरा मानना है कि नमस्ते, ओइम और गायत्री मन्त्र हिन्दुओं की पहचान बन सकती है। पर इसे उन्ही की भाषा में लिखने दें। इस बहाने संस्कुत न सिखाने लगें। यह आसान है और आगे ही काफी हद तक इसे हिन्दु मानने लगें है। बहुत कुछ पर सहमती नहीं बन सकती पर कुछ बातें अपने आप ही ले ली जायेंगी, जैसे कि ओइम और नमस्ते। इतना हो जाये वही काफी है।

vxj vkidk dN dguk g ;k if=dk **subscribe** djuh g
dI;k fuEu address ij lEidZ djs
Hkkjr Un lin] 231 lsDVj& 45-, p.MhxM-160047
0172-2662870] 9217970381] E mail : bhartsood@yahoo.co.in

सम्पादकिय

मदर टरेसा की सेवा भावना ही उसे महान आत्माओं की श्रेणी मे लाने के लिये काफी

मदर टरेसा की सेवा भावना ही उसे महान आत्माओं की श्रेणी मे लाने के लिये काफी है उसे बेबुनियाद और तर्क रहित चमत्कारों की बहंगी पर बिठाकर संत की उपाधी देना ईसाई धर्म के रूढीबाद और गलत मकसदों को दिखाता है। आज 21वी सदी में जब की विज्ञान ने हमारे सोचने का ढंग बदल दिया है, बहुत हैरानगी होती है कि ईसाई धर्म के धर्म गुरू चमत्कारों को महत्व देते हैं। वे इतने मूर्ख नहीं हैं, वे जानते हैं कि चमत्कारों से नहीं वल्कि ठीक ईलाज से रोग टीक होता है पर वे चमत्कारें का सहारा न लें तो गरीब और अनपढ़ लोग गरीब देशों में ईसाई कैसे बनें। मैने रोम में वैटिकन में कुछ समय बिताया, एक बात स्पष्ट थी कि आज ईसाई धर्म का जहाज खींचने वाले श्वेत नहीं बल्कि गरीब देशो से ईसाई धर्म को ग्रहण करने वाले लोग है, जिनकी समृद्धि के लियें मिशनरीयों के पैसे ने बहुत अहम भूमिका निभाई है। जो कभी ईसाई होते थे वे तो अव पहचान के लिये ईसाई हैं, उनका धर्म में कोई विषेश विश्वास नहीं रहा है। उसका कारएा यही बेतुक ढकोसले है।

खैर मैं तो मदर टरेसा को उस की सेवा भावना के लिये नमन करता हूं और महान आत्मा मानता हूं। मैं यह भी नहीं समझता कि पोप उसे महान आत्मा घोषित करने की योग्यता रखता है। अच्छा हो ईसाई धर्म वाले इन चमत्कारों से बाहर निकल कर प्रभु ईसा मसिह द्वारा बताया मानव प्रेम और करूणा का मार्ग ही दुनिया के सामने रखे। इसी में मानव की भलाई और ईसाई धर्म की उन्नती है।

दुश्मनी जमकर करो, पर यह ख्याल रहे,
जब दोस्त बने तो शर्मिदगीं न हो।।
लगता है मोदी और शरीफ साहब दोनों ने यह बात समझ ली है।

आडंबरपूर्ण व्यवहार हमारे आंतरिक खोखलेपन को बताता है

सीताराम गुप्ता

एक टूटी–फूटी झोंपड़ी में एक ग़रीब बुढ़िया रहती थी। दाने–दाने को मुहताज थी पर एक दिन उसको भी अँगूठी पहनने का शौक चर्राया। पाई–पाई जोड़कर किसी तरह एक सोने की अँगूठी बनवा ही डाली। बुढ़िया ने अँगूठी पहनी और सारे गाँव का चक्कर लगा आई पर अफ़सोस कि उसकी अँगूठी पर किसी की भी नज़र न पड़ी। न तो किसी ने उससे अँगूठी के बारे में ही पूछा और न उसकी अँगूठी की तारीफ़ ही की। बुढ़िया बेचारी परेशान। इतनी मुश्किल से तो अँगूठी बनवाई थी उसने और किसी ने भी नहीं देखा। बुढ़िया ने अपनी झोंपड़ी में आग लगा दी।

लोग जब तक पानी लेकर आए तब तक झोंपड़ी राख में तब्दील हो चुकी थी। लोगों ने पूछा कि अम्मा कुछ बचा भी कि सब कुछ जलकर स्वाह हो गया। बुढ़िया ने उँगली आगे करते हुए कहा कि बेटा इस सोने की अँगूठी के सिवा कुछ भी तो नहीं बचा। अब सभी लोग आग की बात भूलकर अँगूठी के बारे में पूछने लगे। एक ने पूछा, ''अम्मा ये कब बनवाई?'' ''अम्मा, ख़ालिस सोने की लगती है कितने में बनी?'' एक और प्रश्न आया। बुढ़िया मन ही मन कह रही थी, ''अरे मुओ! ये सब पहले पूछ लेते तो मुझे अपनी झोंपड़ी क्यों जलानी पड़ती?''

माना कि बुढ़िया अपनी अँगूठी का प्रदर्शन करने, उसके बहाने अपनी तारीफ़ सुनने को मरी जा रही थी लेकिन क्या हम सब के अंदर भी वैसी ही एक बुढ़िया मौजूद नहीं है? हम सब में किसी न किसी रूप में स्वयं को दिखलाने या आत्म–प्रदर्शन की प्रवृत्ति मौजूद होती है लेकिन यह इतनी ज़्यादा भी नहीं होनी चाहिए कि यह विकृति लगने लगे। क्या कारण है इस छद्म व्यवहार का? कहा गया है कि थोथा चना बाजे घना या फिर अधजल गगरी छलकत जाय। कुछ लोग ऐसे कपड़े पहनते हैं अथवा जीवनशैली अपनाते हैं जिससे दूसरे लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्शित हो सके। ऐसे लोग अपने कपड़ों व अन्य बाह्य साधनों द्वारा अपनी पहचान स्थापित करना चाहते हैं क्योंकि उनकी अन्य कोई पहचान होती ही नहीं।

Chandigarh Priest Buys Rs 10 Lakh Number for Audi Car

जिन लोगों के व्यक्तित्व में खामियाँ होती हैं, जिनका व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं होता, जो अल्पज्ञ होते हैं या जिनकी बुरी आदतों अथवा दोशपूर्ण व्यवहार के कारण समाज में मान–प्रतिशठा नहीं होती वो लोग महँगे कपड़ों–जूतों अथवा अन्य बाह्य साधनों द्वारा अपने इस आंतरिक अभाव की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। इसका एक कारण और भी है और वो ये कि हमारे जीवन में किसी न किसी मोड़ पर कुछ चीज़ों का घोर अभाव रहा होता है। उस अभाव को परोक्ष रूप से पूर्ण करने के लिए या उस अभाव की क्षतिपूर्ति करने के लिए भी हम लोगों का ध्यान आकर्शित करने के प्रयास में लगे रहते हैं। यह प्रदर्शन सिद्ध करता है कि हमने जीवन में न केवल अर्थाभाव व अन्य चीज़ों की कमी झेली है अपितु दूसरे क्षेत्रों में भी कोरे हैं। हममें शिक्षा ही नहीं नैतिकता का भी नितांत अभाव है। हम धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति व कला से कोसों दूर हैं। हमारा पहनावा व उसका प्रदर्शन हमारे परिवेश, हमारी परवरिश व शिक्षा–दीक्षा सभी की जानकारी देने में सक्षम होता है।

धर्म–अध्यात्म के क्षेत्र में भी आज यही स्थिति है। धर्म–अध्यात्म के नाम पर कुछ लोगों का पहनावा और उनकी चाल–ढाल विशिश्ट प्रकार की होती है। विशेश रंग का कुर्ता

धोती, दुपट्टा या अंगवस्त्रम्, विशेश प्रकार के जूते या खड़ाऊँ, माथे पर तिलक, गले में मालाएँ, कमर में यज्ञोपवीत तथा हाथों की कलाइयों पर कई लपेटे देकर बाँधा गया कलावा अथवा एक ख़ास अंदाज़ में तराशी गई दाढ़ी–मूँछें रखने वाले तथा बात–बात पर शास्त्रों के हवाले से अप्रासंगिक उदाहरण देने वाले ये लोग अपनी जीवनशैली व व्यवहार से आतंक उत्पन्न करके प्रतीत होते हैं। उनका बाह्य अथवा नाटकीय रूप सिद्ध करता है कि ये व्यक्ति धर्म–अध्यात्म के क्षेत्र में शून्य हैं। वास्तव में धर्म–अध्यात्म के नाम पर कर्मकांड व आडंबरपूर्ण क्रियाएँ हमारी आंतरिक शून्यता व पाखण्ड का ही प्रतीक हैं।

मंदिर–मस्जिद अथवा अन्य धर्मस्थलों के सामने से गुज़रते हुए सर झुकाना लेकिन हर नियम को तोड़ना, हर जगह अनुशासनहीनता का प्रदर्शन करना, अशिश्ट भाशा का प्रयोग करना, हर बात पर निरर्थक बहस करना ये दर्शाता है कि हमारी पढ़ाई–लिखाई अथवा हमारे व्यक्तित्व में कुछ न कुछ खामी अवश्य है। कुछ लोग तो धार्मिक पाखण्ड अथवा अन्य प्रपंच करते ही इसलिए हैं कि लोगों पर प्रभाव डालकर अपना उल्लू सीधा करते रहें। यह हमारे साहित्यिक, सांस्कृतिक अथवा आध्यात्मिक सतहीपन व कपटपूर्ण जीवन को ही बयान करता है। कुछ कलाकार क़िस्म के लोग कानों में बालियाँ वग़ैरा पहनते हैं और उनकी देखादेखी एक छूत के रोग की तरह कुछ अन्य लोग भी। यह अवश्य ही किसी न किसी अभाव, रिक्तता अथवा मनोग्रंथि का सूचक है। कलाकार की पहचान उसकी कला से होनी चाहिए न कि उसके वस्त्राभूशणों से।

भारत रत्न से सम्मानित प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ का जीवन बड़ा सादगीपूर्ण था। फटी हुई लूँगी पहने रियाज़ में लगे रहते थे। भारत रत्न मिल चुका था। मिलने–जुलने के लिए आने वालों का ताँता लगा रहता था। इसी वेशभूशा में सबसे मिलते थे। एक दिन एक शिश्या ने टोकते हुए उनसे कहा, ''आपको भारत रत्न मिल चुका है। मिलने–जुलने के लिए आने वालों से फटी लूँगी पहने हुए मिलना क्या अच्छा लगता है?'' ख़ाँ साहब बोले, '' भारत रत्न हमें शहनाईवादन के लिए मिला है न कि लूँगी के लिए। लूँगी का क्या है सिल जाएगी या नई आ जाएगी पर सुर फटा हुआ नहीं होना चाहिए।'' हमारी संस्कृति में सादा जीवन व उच्च विचार के सिद्धांत को उत्तम माना गया है। उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ साहब इसका प्रमाण थे।

एक कलाकार की पहचान उसकी कला से होनी चाहिए उसके महँगे वस्त्राभूशणों अथवा आक्रामक जीवनशैली से नहीं। कलाकार ही नहीं हर व्यक्ति की पहचान उसके कार्यों से होनी चाहिए। वस्त्राभूशणों अथवा जीवनशैली से नहीं, कर्म और कार्यशैली से ही हमारी पहचान बने। वास्तव में बाहरी साज़ो–सामान आंतरिक रिक्तता को प्रदर्शित करता है। यदि हम अपने आंतरिक विकास की ओर ध्यान देंगे तो इस बाहरी दिखावे की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। ग़रीबी और अभावों के बीच भी यह असंभव नहीं। ज्ञान की प्राप्ति के साथ–साथ अपने अंदर संतुश्टि व सादगी का विकास कर हम आडंबररहित व सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034, फोन नं. 09555622323

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

Cast(e) it aside

Ramesh Kumar

AT an innovative interactive session in Hyderabad, my daughter, Dr Kanu Priya, along with others, was asked to share any "unusual" virtue that she felt her parents had inculcated in her. "Not affixing a surname or caste with our names," pat came her reply.

A few other incidents of the last four decades came back to me.

In the late seventies, I went to admit my elder daughter to a nursery school. I objected to the fee receipt and insisted that her "correct" name (without surname) be used, failing which "I will not send my daughter to your school since I do not want my child to be conscious of caste at this tender age." The principal reluctantly obliged.

In the late eighties, during the course of an agitation, we were detained and sent to the Central Jail, Ambala. Before entering the jail barrack, we were made to queue up, with a man entering our details at a small gate. I was asked about my nation, nationality, religion and caste, to which I replied: "Country India, nationality Indian, religion humanism, caste humanity." Taken by surprise, he asked me again. My reply was the same. He entered the details and stood up in respect, saying, "In my career of 25 years, you are the only person to have replied like this."

Still earlier, at Mukand Lal National College, Yamunanagar, my name was printed as 'Ramesh Kumar Sharma' on the faculty list. I complained about it to the principal, saying my sentiments had been hurt. The gracious principal appreciated my concern and hauled up the editor of the brochure and sternly conveyed my protest. The editor apologised and the 'mistake' was never repeated.

I wonder if in our country, the Election Commission would not permit the addition of surname/caste with the names in the voters' list or with the names of candidates in the nomination forms, how would a Jawaharlal or Narendra Damodardas write Nehru or Modi with their respective names while working on constitutionally elected posts?

I further ponder that if with one stroke of the pen, our Supreme Court/Central government can make everyone write the names of their mother along with the names of their father in matriculation certificates across India, why can they not make it mandatory for young students and parents to only write their names in forms and certificates. The same practice will automatically be followed later in their service records and will serve as a small step to evolve the younger generation of students as Indian citizens instead of them being recognised by their caste and sub-caste.

Six Best Doctors in the World

1. Sunlight **2. Rest** **3. Exercise**

4. Diet **5. Self Confidence and** **6. Friends**

Maintain them in all stages of Life and enjoy a healthy life.

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

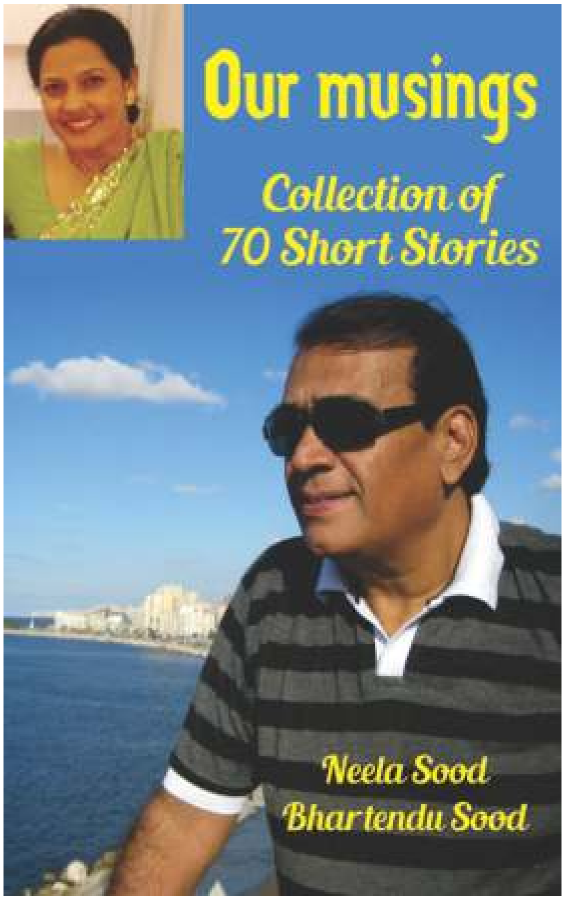

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

अभयं मित्रादभयममित्राद भयं ज्ञातादभयं नो परोक्षात

अभयं नक्तमभयं दिवा न सर्वा आशा मम मिं़त्र भवन्तु।।

अथर्व वेद के इस मन्त्र में कहा है मित्र से हम अभय हो, शत्रु से अभय हों, परिचत से हम अभय हो, और जो परिचत नहीं हैं उस से भी हम अभय हो, दिन में अभय हो और सब दिशाऐं मेरी मित्र हों। देखने की बात यह है कि पहले प्रभु से प्रार्थना यह की गई है कि हम मित्र से अभय हो और उसके बाद यह कहा गया है कि हम शत्रु से अभय हो । ऐसा इसलिये कि जब मित्र शत्रु बन जाता है तो वह शत्रु से भी अधिक भयानक हो जाता है। हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि जब मित्र ही शत्रु बन गया तो उस ने शत्रृ से भी अधिक ध्वंस किया। इसलिये हमारे निती शास्त्र कहते है, कि हम मित्र बनाते हुये भी विचार करें और जब किसी को मित्र कह दिया तो हमारा व्यवहार उससे सत्यपूर्ण हो । जब मि़त्र के प्रति हमारा व्यवहार सत्यपूर्ण है तो हमें उस से किसी भी प्रकार का भय नहीं हो सकता।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

अंग्रेजी शासन की भारत को देन

कृश्ण चन्द्र गर्ग

भारत पर अंग्रेजों का राज 1757 से 1947 तक रहा। उससे पहले लगभग साढ़े पाँच सौ साल तक भारत पर मुसलमानों ने राज किया। भारत पर अपने 190 वर्ष के शासन के दौरान अंग्रेजों ने भारत को क्या दिया इस विषय पर संक्षेप में लिखा जा रहा है।

अंग्रेजों ने भारत को बढ़िया व्यवस्थाएं दीं। उन्होंने हमें स्वतन्त्र न्यायपालिका दी। अंग्रेजों से पहले मुस्लिम राज में न्यायपालिका स्वतन्त्र नहीं थी, न्याय पूरी तरह मुसलमानों के पक्ष में हुआ करता था। अंग्रेजों ने हमें स्वतन्त्र पत्रकारिता (Press Media) दी, बढ़िया शिक्षा व्यवस्था दी – स्कूल, कालिज और विश्वविद्यालय खोले। उन्होंने हमें प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली दी। जातपात, नसल और मजहब का लिहाज किए बिना सबके लिए बराबरी का सिद्धान्त दिया। उन्होंने भारत की सभी स्वतन्त्र रियासतों को एक केन्द्रीय शासन के नीचे लाकर भारत को एकता के सूत्र में पिरोया। सारे देश में रेलवे का, सड़कों का, नहरों का, डाकघरों का जाल बिछाया। उन्होंने जो भी काम किए बहुत बढ़िया और उंचे स्तर के किए। फिर भी जब अंग्रेजों ने भारत को छोड़ा देश पर कोई कर्ज़ न था।

अंग्रेजों के आने से सबसे बड़ी उपलब्धि जो हुई वह है कि हमें अत्याचारी मुगल शासन से छुटकारा मिल गया।

स्वतंत्रता संग्राम दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह ज़फर के नेतृत्व में लड़ा जा रहा था। अंग्रेजों के खिलाफ उस लड़ाई में अगर भारतीय जीत जाते और अंग्रेज तब भारत को छोड़कर चले जाते तो भारत फिर से जालिम मुसलमान शासकों के अधीन हो जाता।

3 अंग्रेजों की भारत को एक और बड़ी देन है – अंग्रेजी भाषा। अंग्रेजी भाषा के कारण ही भारत आज सारी दुनिया से सम्पर्क बनाए हुए है। दूसरे देशों से विज्ञान तथा तकनीकी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही ली जा रही है। अंग्रेजी भाषा के कारण ही बहुत से पढ़े लिखे भारतीय लोग विकसित पश्चिमी देशों में जाकर अपने, अपने परिवार के तथा भारत के विकास में भागीदार बन रहे हैं। इंटरनैट की भाषा भी अंग्रेजी ही है जिसके द्वारा संसार के एक कोने में बैठा व्यक्ति दूसरे कोने पर बैठे व्यक्ति से सैकण्डों में पत्र व्यवहार कर लेता है। अंग्रेजी भाषा के बिना हम कूप मण्डूक (कुएं का मेंडक) ही बने रहते। भारत में भी अलग–अलग प्रान्तों के व्यक्ति जहां हिन्दी भाषा माध्यम नहीं है अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही वार्तालाप करते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी भाषा देश को जोड़ती है, तोड़ती नहीं। देश को तोड़ने का काम करती हैं प्रान्तीय भाषाएं।

लाला लाजपत राय ने तो लिखा है – ''स्वामी दयानन्द के अभिप्राय को उन्हीं लोगों ने पहचाना है जिनकी आँखें अंग्रेजी शिक्षा की रोशनी ने खोल दी थीं। संस्कृत के पण्डितों ने स्वामी जी के मन्तव्यों का बहुत कम आदर किया और उनमें से कोई भी उनका अनुयायी नहीं बना।'' पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय उस समय के प्रसिद्ध आर्य सामजी थे। वे सबके सब अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त थे। राजा राममोहन राय ने भी लार्ड मैकाले द्वारा अंग्रेजी पढ़ाए जाने का समर्थन किया है। उनका मानना था कि केवल संस्कृत पढ़ने वाले लोग तंगदिल हैं जबकि अंग्रेजी शिक्षा से हिन्दू ज्यादा तार्किक और खुले दिमाग वाले बनेंगे।

प्रोफैसर सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने अपनी पुस्तक 'सत्य की खोज' में पृष्ठ 136 पर लिखा है कि अंग्रेजों के आने पर ही भारत में प्रचलित कुरीतियों को दूर करने का सूत्रपात हुआ।

ब्राह्मणों के तगड़े विरोध के बावजूद अंग्रेजों ने भारत में समाज सुधार के कई कानून बनाए। पति के मरने पर पत्नी को साथ ही जीवित ही जला देने की प्रथा थी जिसे सती प्रथा कहते हैं। अंग्रेजों ने राजा राममोहन राय के सहयोग से 1828 में सती प्रथा के विरुद्ध कानून बनाया। 1856 में ईश्वरचद्र विद्यासागर के सहयोग से अंग्रेजों ने विधवा विवाह को वैधता दिलाने वाला कानून बनाया। प्रायः छोटी उमर की लड़कियों का विवाह बड़ी उमर के पुरुषों के साथ कर दिया जाता था। दीवान हरविलास शारदा के सहयोग से अंग्रेजों ने 1929 में बाल विवाह के विरुद्ध कानून बनाया। 1939 में जातपात तोड़कर होने वाले विवाह को वैधता देने वाला कानून घनश्याम सिंह गुप्त के सहयोग से अंग्रेजों ने बनाया।

जालन्धर दोआबा के कमिश्नर जॉन लॉरैंस ने जब जमींदारों में सती प्रथा, कन्याओं को जन्मते ही मारने और कोढ़ियों को जीवित दबाने की बात सुनी तो उसने इन तीनों क्रूर प्रथाओं को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। जमींदारों के जमीनों के नए पट्टे बन रहे थे। जो भी जमींदार आता लॉरैंस उसे तीन कसमें खिलाता – विधवा नहीं जलाऊँगा, बेटी नहीं मारूंगा और कोढ़ी नहीं जलाऊँगा । लॉरैंस का साफ कहना था कि जो प्रतिज्ञा नहीं करेगा उसे जमीन नहीं मिलेगी। लॉरैंस की इस व्यवस्था का विरोध बहुत हुआ पर वह अपनी बात से न टला। उसने कहा कि जो विधवा को जलाएगा हमारा कानून उसे फांसी पर लटका देगा।

कलकत्ता महानगर की स्थापना करने वाले जॉन चारनक के जीवन की घटना है। एक ब्राह्मण युवती को परिवार वालों ने जबरदस्ती उसके मृत पति के साथ चिता में जलाना चाहा। वह डर के मारे चिल्लाई और भागी। जॉन चारनक ने उस युवती की रक्षा की। ब्राह्मणों ने उस अंग्रेज को डराया, धमकाया और उस विधवा को पुनः अपने समाज में स्वीकार न किया। अन्त में जॉन चारनक ने उस विधवा को अपनी पत्नी बना लिया।

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, परम वैदिक विद्वान महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने महान ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में योरोपियनों की उन्नति के कारणों के बारे में लिखा है – ''बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का लड़की को विद्या–सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवर विवाह होना, बुरे–बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होना। वे विद्वान होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते, जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं। अपनी स्वजाति की उन्नति के लिए तन, मन, धन व्यय करते हैं। आलस्य को छोड़ उद्योग किया करते हैं। ...... और जो जिस काम पर रहता है उसको यथोचित करता है। आज्ञानुवर्ती बराबर रहते हैं। अपने देशवालों को व्यापार आदि में सहाय देते हैं। इत्यादि गुणों और अच्छे–अच्छे कर्मों से उनकी उन्नति है।''

भारत के महान समाज सुधारक राजा राममोहन राय ने लिखा है – ''जब मुझे ज्ञात हुआ कि अंग्रेज लोग प्रायः अधिक बुद्धिमान, अधिक धैर्यवान और सुशील हैं तो उनके प्रति मेरी घृणा जाती रही और मैं उनके पक्ष में हो गया। मुझे विश्वास हो गया कि उनका राज, विदेशी जुआ होते हुए भी, देशवासियों के सुधार का शीध्र और निश्चित साधन बन सकेगा''। (गंगा ज्ञान सागर – इतिहास विषय)

महात्मा ज्योतिबा फुले ने बाल विवाह का विरोध किया, विधवा विवाह का समर्थन किया तथा स्त्री शिक्षा के लिए स्कूल खोले – एक 1848 में और दूसरा 1851 में। ब्राह्मणों ने इसका विरोध किया। परन्तु अंग्रेज सरकार ने 200 रुपये के मूल्य का एक शाल भेंट करके महात्मा फुले को सम्मानित किया।

महर्षि दयानन्द ने भी अंग्रेजी शासन की प्रशंसा की है। 23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्याचार से कुछ–कुछ छुटकारा मिला है। ''मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं।

इसका कारण इंग्लैंड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्तत्रा से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठित था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।''

ऐसा ही आशय महर्षि दयानन्द की ओर से 10 अगस्त 1878 को जारी विज्ञापन में दर्शाया गया है।

महर्षि दयानन्द अपने भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ – सब काम आंग्रेजी शासन में ही कर सके। वर्तमान स्वतन्त्र भारत में भी वे न कर सकते, उन पर साम्प्रदायक भावना भड़काने का आरोप लगाकर पाबन्दी लगा दी जाती।

कुछ लोग भारत विभाजन के लिए अंग्रेजों को जिम्मेदार ठहराते हैं जो सरासर गलत आरोप है। भारत विभाजन में अंग्रेजों का कोई हाथ नहीं है। अंग्रेजों के आने से पहले भारत पर मुसलमानों का राज था। सन 1947 में हालात बदल गए थे। प्रजातन्त्र में राज करने के लिए जनसंख्या का महत्त्व है। सन 1940 में भारत में मुसमलान 24: थे। मुहम्मद अली जिन्नाह ने महसूस कर लिया कि अब समूचे भारत पर मुस्लिम राज होना मुश्किल है। इस्लाम के अनुसार शासक सदा मुसलमान ही होना चाहिए। इसलिए उन्हें मुस्लिम बहुसंख्या वाला देश चाहिए था। अगस्त 1947 से एक वर्ष पहले जिन्नाह ने ऐलान कर दिया था “Either we have divided India or we have destroyed India अर्थात हमें भारत का विभाजन चाहिए नहीं तो हम भारत को बरबाद कर देंगे।'' तभी सन् 1946 में बंगाल में मुसलमानों ने हिन्दुओं का कत्लेआम करना शुरू कर दिया था।

अंग्रेजी शासन के दौरान कानून की इज्जत थी। भ्रष्टाचार बहुत कम था। शायद ही कोई अंग्रेज अफसर रिश्वत लेता हो। आम लोगों का जानमाल सुरक्षित था।

कृष्ण चन्द्र गर्ग सुवा निवृत प्रोफैसर हैं और महान लेखक हैं, उनकी कई पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा

दूरभाष : 0172–4010679

ARYA SAMAJ AND DR.B.R. AMBEDKAR HOW FAR AND HOW CLOSE?

Y.K. Wadhwa

Taking cue from the life and teachings of Swami Dayanand, Arya Samaj was quite active in raising the social and educational level of Dalits since 1885 especially in North India. So much so Mahashya Ram Chand Mahajan who was actively associated with removal of untouchability programme of Arya Samaj in Jammu region was severely beaten by Rajputs and he succumbed to his injuries resulting into his death on 20th June, 1923. In Sialkot Maghodar Sabha was formed in 1903 and Pandit Ganga Ram successfully carried on his reform programme and got a large number of meghas (considered to be low caste) admitted in Arya Gurukuls and other educational institutions. From 1903 onwards many dalitodhar/Achhutodhr sabhas were established at Sialkot, Lahore, Amritsar, Allahabad, Delhi, etc. which took up constructive programmes for the welfare of Dalits. In fact this word 'Dalit' was also coined for the first time by Arya Samaj as is apapparent from names of various Sabhas like All India Shradhanand Dalitodhar Sabha which was established in 1921 and Dayanand Dalitodhar Sabha established in Lahore on 11 May, 1930. After his return from U.S.A., Dr.Ambedkar wrote to Pt.Atma Ram that due to his poor legal practice he was not in a position to immediately clear the educational loan taken from Maharaja Baroda. Panditji who had close contact with Dr.Ambedkar took up the matter with Maharaja and got the loan waived off completely. Many Dalit students of Pt.Atma Ram Amritsari in those days became Mechanical Engineers. Panditji's family members including his daughter Sushila Kumari remained closely associated with the work relating to dalit welfare. There is no chance that all such massive dalit welfare programmes/removal of untouchability and other attempts made by Arya Samaj in breaking the birth based caste barriers could have escaped the attention of Dr.Ambedkar. It was especially, with the efforts of Shri Ghansham Singh Gupta, President, Madhya Pradesh Arya Pratinidhi Sabha, in 1937 an Act was passed for validation of Inter-caste marriages amongst Hindus. An important question ,therefore, arises here as to why Dr.Ambedkar did not join the rational Arya Samaj which repudiated 'caste' based on birth and his choice fell for Buddhism which in those days was hardly doing any ground work? Dr.Ambedkar has admitted in his book 'Annihilation of Caste' "I must admit that the Vedic theory of Varna as interpreted by Swami Dayanand and some others is a sensible and an inoffensive thing. It did not admit birth as a determining factor in fixing the place of an individual in society. It only recognized worth. The Mahatma's (Mahatma Gandhi) view of Varna not only makes nonsense of the Vedic Varna but it

makes it an abominable thing. Varna and Caste are two very different concepts". To my mind Dr.Ambedkar ignored Arya Samaj and embraced Buddhism because of his misconceptions and misgivings about the Vedic texts. He outrightly rejected the authority of Vedas and Shastras primarily because of the influence of the distorted writings of orthodoxy as well as the imperial scholars. Dr.Ambedkar writes "You must take the stand which Guru Nanak took. You must not only discard the Shastras, you must deny their authority, as did Buddha and Nanak. You must have the courage to tell the Hindus, that what is wrong with them is their religion-the religion which has produced in them this notion of the sacredness of caste." (Source: Annihilation of Caste, by Dr.B.R. Ambedkar, pub.by Anand Sahitya Sadan, Aligarh). Here I think Dr.Ambedkar was mistaken and he missed some of the important points . No doubt Guru Nanak was opposed to the evil practices prevalent in those days amongst Hindus, but his role was that of a good Doctor who does not pluck the eye in order to treat some eye ailment. The root of Adi Granth (Guru Granth Sahib) is in the Vedas and Guru Nanak says "Asankh Granth Mukh Ved Path" i..e, there are innumerable scriptures but the main amongst them are the Vedas. At another place he says Guru Nanak clearly says as the lamp is lit darkness is removed. Similarly by study of the Vedas, evil thoughts-paaps are destroyed - Diva baley andhera jai, Ved path mati papa khai(Adi Granth - page 791). Similarly we find that Pt.Dharma Deva Vidya Martanda, an eminent scholar from Arya Samaj in his book "Mahatma Budha an Arya Reformer (1957 Ed.) while quoting some references from a Buddhist text, 'Sutta Nipata' has proved Mahatma Buddha's belief in the authority of the Vedas and says "It is generally believed that Buddha was opposed to the Vedas altogether and he revolted against their authority. But on an impartial study of the Buddhist scriptures, containing Buddha's discourses we find that there is no truth in this common belief. Certainly as we have shown above, he had no regard for those people who were well versed in the Vedas, but were not leading pure and noble lives according to the Vedic teachings." In a meeting with Pt.Dharam Devji, Dr.Ambedkar said that you have explained to me about the ancient Vedic religion like parents teaching a child, but to me it appears that mindset of the orthodoxy does not seem to be changing. However, I think there was a fundamental difference between the approach of Dr.Ambedkar and Arya Samaj. Dr.Ambedkar wanted to completely annihilate the caste system while the majority of leaders of Arya Samaj were keen to revive the ancient Vedic System of Varna based on qualities and actions of an individual, i.e., the karmana system. 'Jat-Pat-Todak Mandal' of Lahore whose members were overwhelmingly Arya Samajists who played a very active role in removal of untouchability and breaking the caste barriers invited Dr.Ambedkar to preside over their conference in 1936. However, the Conference had to be cancelled because Dr.Ambedkar was not willing to expunge his derogatory remarks about the Vedic texts from his address. Mr.Sant Ram, Secretary of the above Mandal in a letter sent to the Harijan mentioned that in the supplementary portion of his written speech, Dr.Ambedkar also insisted that this was his last address as a Hindu. According to Dr.Mahendradas Thakur, Dr.Ambedkar had at one point made up his mind to join Arya Samaj along with persons of Dalit community, but due to proximity of Arya Samaj and Hindu Mahasabha, he instead decided to embrace Buddhism (Source: Arya Samaj aur Dr.Ambedkar by Dr.Kushal Dev Shastri, 2008 Ed.pub.by Shri Ghudmal Prahladkumar Arya Dharmarth Nyas, Hindon City, Raj)

कैसे एक अनपढ़ व्यक्ति से मुझे जीवन में प्रसन्नता के रहस्य का ज्ञान हुआ

उर्वशी गोयल

मैं कुछ ही समय पहले प्रिंसिपल के ओहदे से रिटायर हुई थी। जो मैने मकान बनाया था वह मेरी ज़रूरत के लिये बहुत बड़ा था इसलिये पीछे का कमरा मैने एक पानी के महकमें में कार्यरत सरदार संतोख सिंह को किराये पर दे दिया। उसने बताया कि वह वहां अकेला ही रहेगा क्योंकि उसका परिवार गांव में ही रहता है। जब मैं पहली बार उससे मिली थी तो मैने कुछ खास ही बात उसके व्यक्तित्व में देखी, वह बिल्कुल शांत था व उसके चेहरे में प्रसन्नता व सन्तोश झलक रहा था जो कि उसके पास आने वाले को भी कुछ समय के लिये शांत वं प्रसन्नचित करता था।

संतोख जी,––'' मैं बाहर का दरवाजा रात तो 10 बजे बन्द कर देती हूं, इस के बाद मुझे दरवाजा खोलने के लिये उठना न पड़े, इसलिये आप को 10 बजे से पहले ही कमरे में आना होगा'' मैं अपनी पुरानी आदत के अनुसार बोली। ''मैडम जी यह बहुत अच्छी बात है, इस से मैं अनुशासन में रहूंगा।'' सरदार संतोख सिंह बहुत विनम्रता से बोले।

अभी कुछ ही दिन बीते थे कि मैने देखा कि वह अपने पीछे बरामदे की लाईट सारी रात खुली रखता है। जब मैने इस तरफ उसका घ्यान दिलवाया तो वह बहुत विनम्रता से मुझे बोला––'' मैं यह बल्ब सारी रात इस लिये जलाये रखता हूं, ताकी रात के समय हमारी गली से गुजरने वालों को प्रकाश रहे। आप चिन्ता न करें, मैं इसका जो भी खर्च है आप को दे दिया करूंगा। ''संतोख जी यह सब आप को करने की क्या आवश्यकता है? यह नगरपालिका कि जिम्मेदारी है।'' मैने जवाब दिया

''मैडम जी आपकी बात ठीक है पर मैं यह समझता हूं कि साथ वाले मनुश्यों के प्रति हमारे भी कुछ मानवीय कर्तव्य हैं। हमारे गुरू भी कहते हैं कि हमे अपनी आय का कुछ हिस्सा परोपकार के कामों पर खर्चना चाहिये।'' जब वह यह सब कह रहा था, मैं उसके सन्तोश से भरे चेहरे की ओर देख कर महसूस कर रही थी कि कैसे अध्यात्मवाद व भौतिकवाद ने अलग अलग तरह से हम दोनों के जीवन की सोच को प्रभावित किया हुआ था।

इस घटना के कुछ दिन बाद मेरी एक पुरानी सहेली मुझ से मिलने आई। इधर उधर की बाते करने के बाद मेरे पीछे के कमरे की बात चली तो बोली –––'' एक तो तुम किराया कम लेती हो दूसरा तुम्हें अपने जंजने का ही किरायेदार रखना चाहिये था। उसकी बात मुझे छू गई व मैने संतोख सिंह को निकालने का निश्चय कर लिया।

जैसे ही वह शाम को आया मैने उसे बिठा कर कहा–––'' संतोख सिंह जी मैं आपको कभी जाने के लिये न कहती पर कल रात ही मेरे बेटे का अमेरिका से फोन आया है कि वह सदा के लिये अपनी पत्नी

के साथ भारत आ रहा है। इस लिये मुझे अब पीछे का कमरा चाहिये होगा।''

मैं बहुत हैरान हुई कि मेरी इस बात से, जिसे कहने में मुझे परेशानी आ रही थी, उसे सुन कर संतोख सिंह के चेहरे पर कोई परेशानी नहीं थी। वह बहुत इत्मीनान से बोले–––''मैडम जी यह तो बहुत अच्छी बात है कि आप के बच्चे वापिस आ रहें है। आप बहुत भाग्यशाली हैं। वरना मैने तो यही देखा है कि जो बाहर जाते हैं वह वापिस नहीं आते, वहीं बस जाते हैं। खैर मैं एक महीने बाद आपका मकान खाली कर दूंगा। यह आपकी महानता है व मेरी अच्छा मुकदर है कि आप ने मेरे जैसे अनपढ़ व छोटे आदमी को जगह दी।''

मैने सुख की सांस ली क्योकि मैने इस तरह के जवाब की अपेक्षा भी न की थी।

महीने के अन्तिम दिन वह मेरे पास आया व बोला ––––''मैडम जी! मैं जा रहा हूं। मैं अपना सामान घोड़ा गाड़ी पर लाद रहा था तो मुझे कमरे के कीनारे पड़ी यह डिब्बी मिली कहीं यह आपकी तो नहीं?''

एक दम हैरान मैं डिब्बी को देख रही थी। इसमें मेरी सोने की बालियां थी जो बहुत समय से नहीं मिल रही थी। मुझ से रहा न गया, मैने संतोख सिंह से प्रश्न किया––'' संतोख सिंह जी क्या आपको पता था कि इसमें सोने की चीज़ है''

संतोख सिंह मुस्कराया और हंसते हुये बोला––––'' मैडम जी मैं अनपढ़ ज़रूर हूं पर सोने और पत्थर के बीच फर्क ज़रूर समझता हूं।

मैं अपने प्रश्न पर कुछ झेंपी और स्पश्टीकरण देते हुये

बोली––––'' संतोख सिंह जी मेरा यह अर्थ बिल्कुल नहीं था। सच्चाई यह है कि कोई साधु सन्त ही सोने को पत्थर की तरह ठोकर मार सकता है। न जाने क्यों मुझे यह महसूस हो रहा है कि आप आम आदमी से कहीं उपर हैं।'' यह कहती हुई मैं उसको लगातार अविश्वास व आदर भाव से देख रही थी। उसने हाथ जोड़कर मुझ से विदा ली।

उसकी दूर जाती घोड़ा गाड़ी को देख मैं अपने आप को उसके सामने बहुत छोटा महसूस कर रही थी। एक अनपढ़ व्यक्ति ने मुझे जीवन में प्रसन्न रहने के रहस्य का बोध करवा दिया था––– कोई कभी शिकायत नही, केवल धन्यवाद की भावना। मुझे पता लग गया था कि इन किताबी डिगरीयों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जीवन जीने की कला का आभास होना जो कि अच्छे व्यक्तियों व महात्माओं की संगत और स्वाध्याय द्वारा ही सम्भव है।

नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकटारमन ने ग्रहों पर अधारित ज्योतिष विद्या को बकवास और बेबुनियाद बताया

हमारे देश मे अधिकतर लोंगों को ग्रहों पर अघारित ज्योतिश विझा पर बहुत विश्वास है। शायद ही कोई शादी विवाह ऐसा होता हो जिस में पडिंत की राय नहीं ली जाये। यही नहीं अगर किसी को पडिंतो द्वारा मंगलीक घोशित कर दिया जाये तो उसकी शादी इतनी आसान नहीं रह जाती, उसके लिये मंगलीक वर बधु ही ढूंढने पढ़ते है।

बात यहीं नहीं खत्म हो जाती, शादी के लगन और फेरे उसी समय किये जाते हैं जब कि पण्डित घोशित कर दे, चाहे उस समय सब का नींद से बुरा हाल हो। लगभग साल 1920 तक महऋिशी दयानंद सरस्वती के आर्य समाज का प्रभाव रहा तो आर्य समाजीयों ने जम कर ज्योतिश विझा का खंडन किया और स्वयं भी जो शादियां विवाह करते थे उस में ज्योतिश विद्या के अनुसार अच्छा या बुरा दिन नहीं देखते थे। पर गुरूकुलों और RSS के प्रभाव के बाद सब पौराणिक बातें आर्य समाज में आने शुरूं हो गई और आज जो अपने आप को आर्य समाजी कहते हैं वह भी ज्योतिश विद्याा के अनुसार ही शादी विवाह करते है, श्राद्धों में शादियां नहीं करते।

खैर जो बात महऋिशी दयानंद सरस्वती ले कही थी वही नोबेल पुरस्कार विजता वेंकटारमन ने चण्डीगढ़ में हुये विज्ञान सम्मेलन में कही कि ग्रहों पर अघारित ज्योतिश विझा बकवास और बेबुनियाद है। मजे कि बात यह है कि जो तर्क सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानंद ने दिये वही वेंकटारमन ने दिये। खैर चाहे महऋिशी दयानंद सरस्वती कहे या फिर नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकटारमन हम भारतीयों पर इस का असर होते वाला नहीं क्योंकि हम अपने जीवन की चाबी दूसरों के हाथ देकर चलना पसन्द करते है।

The One who loves you will never leave you because even if there are 100 reasons to give up he or she will find one reason to hold on.

There is a big difference between a human being and being human. Only a few really understand it.

If you just want to Walk Fast, Walk Alone!
But if you want to Walk Far, Walk Together!

स्वस्थ रहने के लिए अनिवार्य है धरती माँ के स्वास्थ्य को नश्ट होने से बचाए

आशा गुप्ता

एक शिशु और माँ का रिश्ता अत्यंत आत्मीय व महत्त्वपूर्ण होता है। माँ न केवल बच्चे को जन्म देती है अपितु यथासंभव अच्छी प्रकार से उसका पालन–पोषण भी करती है। यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि माँ के स्वास्थ्य का भी बच्चे के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यदि माँ पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होगी तो बच्चा भी पूरी तरह से स्वस्थ नहीं रह पाएगा। यदि नन्हे शिशु को गर्मी–सर्दी, जुकाम व अन्य रोगों से बचाना है तो माँ को भी गर्मी–सर्दी, जुकाम व अन्य रोगों से बचाना ही नहीं उसे पूर्ण विश्राम, संतुलित भोजन व उचित परिवेष उपलब्ध करवाना भी अनिवार्य होगा। मनुष्य व धरती माँ के बीच भी तो एक नन्हे शिशु व माँ का रिश्ता ही है। यह पृथ्वी भी हमारी माता है। हम भारत को भारत माता कहते हैं। अथर्व वेद में कहा गया है कि माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या। वास्तव में समस्त पृथ्वी ही हमारी माता है।

जिस प्रकार जन्मदात्री माता हमारा पालन–पोषण करती है उसी प्रकार से पृथ्वी भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हमारा पालन–पोषण करती है। उसमें उत्पन्न अन्न, फल–फूल व मेवे हमारा आहार बनते हैं। उसमें प्रवाहित होने वाली नदियों के जल से हमारी प्यास बुझती है। पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित ऑक्सीजन हमारे जीवित रहने के लिए अनिवार्य है जो पृथ्वी पर उगने वाले पेड़–पौधों व वनस्पतियों के द्वारा ही प्रदान की जाती है। उसकी धूल में लोट–लोटकर ही हम बड़े होते हैं। पृथ्वी की ऊपरी सतह अर्थात् मिट्टी स्वयं उपचारक शक्ति से युक्त होती है। लेकिन आज ये रिश्ता लगातार कमज़ोर पड़ता जा रहा है। इसमें अनेक दरारें पड़ चुकी हैं। इसका सीधा असर मनुष्य के पोषण व परिवेष पर पड़ रहा है। जिस प्रकार से एक माँ के स्वास्थ्य का सीधा संबंध उसके नन्हे शिशु के स्वास्थ्य से है उसी प्रकार से धरती माँ के स्वास्थ्य का संबंध भी उसकी संतानों अथवा मनुष्यों से है।

यदि धरती माँ का स्वास्थ्य भी पूरी तरह से बिगड़ गया तो उसकी संतानों अर्थात् मनुष्य का न केवल भौतिक स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा अपितु उसका जीवित रहना ही असंभव हो जाएगा। धरती माँ के स्वास्थ्य से क्या तात्पर्य है? धरती मां के स्वास्थ्य से तात्पर्य है उसकी ऊपरी सतह व वायुमंडल के स्वास्थ्य अथवा शुद्धता से। आज हमारे भूमंडल के पांचों तत्त्व धरती, जल, अग्नि, वायु व आकाश पूरी तरह से प्रदूशित हो चुके हैं। पृथ्वी की ऊपरी सतह अर्थात् भूमि पर अनेक प्रकार के प्रदूशित पदार्थों व कूड़े–कचरे के ढेर लगे हैं। मानव द्वारा उत्पन्न कूड़े का प्रबंधन एक बड़ी समस्या बन गई है। वनों की बेतहाशा कटाई व खनन के कारण पारिस्थितिकी बुरी तरह से प्रभावित हुई है। जैवविविधता नश्ट हो रही है। उद्योगों से निकला कचरा व रासायनिक पदार्थ भूमि की उपजाऊ परत, नदियों व भूमिगत जल को बुरी तरह से प्रभावित कर रहे हैं।

ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण समुद्रों का जल स्तर निरंतर बढ़ता जा रहा है जिसके कारण दुनिया के कई ख़ूबसूरत शहरों को समुद्र में डूब जाने से कोई नहीं बचा पाएगा। उद्योगों व वाहनों के ज़हरीले धुएं से आज दिल्ली, मुंबई ही नहीं देश व दुनिया के सभी बड़े शहरों की हवा इस कदर ख़राब हो चुकी है कि इन शहरों में लोगों का साँस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। ऑक्सीजन के साथ–साथ अन्य ज़हरीली गैसें भी मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर अनेक विकारों को जन्म दे रही हैं। कार्बनडाईऑक्साइड जैसी गैसें अधिक मात्रा में हमारे रक्त में मिल जाने के कारण हमारी कार्य क्षमता में निरंतर कमी आती जा रही है। इस ज़हरीली हवा में साँस लेने के कारण बच्चे, बूढ़े और बीमार ही नहीं स्वस्थ नवयुवक भी थके–थके से लगते हैं। इसके साथ अनेक अन्य रोग भी हम पर आक्रमण कर रहे हैं और प्रदूषण के कारण रोगों के ठीक होने की संभावनाएँ भी लगातार कम होती जा रही हैं।

वो दिन दूर नहीं दिखता जब हर समय मास्क लगाकर रहना पड़ेगा। लेकिन पृथ्वी के वायुमंडल की ओज़ोन परत का क्या करेंगे? पृथ्वी के वायुमंडल में आज़ोन की जो परत है वह सूर्य से आने वाली घातक पराबैंगनी किरणों व अन्य हानिकारक गैसों को पृथ्वी पर आने से रोक कर हमारी रक्षा करती है। उसमें भी छेद हो चुका है। जीवनदायिनी धरती माँ और उसकी संतानों को स्वस्थ बनाए रखने और रोगों से बचाए रखने के लिए धरती माँ का स्वास्थ्य ठीक करना अनिवार्य है। इसके लिए हमें अपने निरंकुश उपभोग पर लगाम लगाकर पृथ्वी व उसके परिवेश को नष्ट होने से बचाना होगा। हमें अपरिग्रह का पालन करना होगा। साथ ही वाहनों की संख्या को एकदम से नियंत्रित करना भी अनिवार्य है अन्यथा वाहन तो होंगे लेकिन वाहनों को चलाने वाले नहीं रहेंगे।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034

मोबा0 नं0 09310172323ए,

Email: srgupta54@yahoo.co.

भारत में महिला शिक्षा

बृशटी गुहा

भावाभूती द्वारा लिखित आठवी सदी का एक संस्कृत के नाटक उतरारामचिरता में यह पढ़ने को मिलता है —— दो विदुशियां अतरई और वसन्ती अचानक एक यात्रा के दौरान एक दूसरे को मिलती है। बातचीत में अतरई वसन्ती को बताती है कि यद्यपि वह उतर भारत के एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय की छात्रा है पर क्योंकि उसका आचार्य किसी पुस्तक को लिखने में बहुत व्यस्त है इसलिये वह द्क्षिण भारत पढ़ने के लिये जा रही है। अतरई की बात सुनकर वसन्ती बोली कि तुम बहुत ठीक कर रही हों । यहां यह बता दें कि अतरई का आचार्य और कोई नहीं रामायण को लिखने वाले ऋषि बालमिकी ही थे, और जिस पुस्तक को लिखने में वे व्यस्त थे वह रामायण ही थी। यहां यह भी समझाना आवश्यक है कि दक्षिण भारत की यात्रा का अर्थ था ज्ञान की खोज में सैंकड़ो मील, सब कठिनाईयों को झेलते हुये, चल कर जाना, क्योंकि उस समय आज की तरह सुविधाये न थी। और जिन आचार्य के पास वह जा रही थी उन का नाम अगस्तया था।

इस घटना को बताने का अभिप्राय यह है कि हमारे देश में स्त्रियाँ पुरूषों की तरह ही शिक्षा प्राप्त करती थी और विदुशी हुआ करती थी

हम यह भी जानते हैं कि मिथिला के राजा जनक के दरवार में महिला विदुशी गाारगी का वर्णन आता है जो कि राजा के नवरत्नों में से एक थी। उसने प्रसिद्व विद्वान यजनावालकया जिसने की भारत में मुगलों के आने से पहले प्रचलित व अपनाये जाने वाली कानून व्यवस्था को लिखा था, से ऐसे प्रश्न पूछे कि उसे गारगी के आगे नतमस्तक होना पड़ा। यही नही ऋवेद में कम से कम 20 विदुशीयों का नाम आया हैं

थेरीगाथा जिस का संकलन इसामसीह के जन्म से 600 वर्ष पहले किया गया केवल महिला लेखकों द्वारा लिखा ग्रन्थ है। इस से एक बात साबित होती है कि प्राचीन भारत में महिलायें वैसे ही शिक्षा प्राप्त करती थी जैसे कि पुरूष।

आईये इसका एक और उदाहरण देखें। 1150 इसवी में भासकरा द्वितिय ने जो कि अपने समय के विश्व के सब से जानेमाने गणित विषेशज्ञ हुये हैं, एक पुस्तक लिलावती लिखी । इस पुस्तक की खास बात यह थी कि यह महिलाओं के लिये लिखी गई थी। यह पुस्तक अगले 750 वर्षों के लिये गणित की मुख्य पुस्तक रही जो कि फिर इस बात को बताती हैं कि भारत की महिलायें शिक्षा प्राप्त करती थी और विदुशी हुआ करती थी।

पर हम यह भी जानते हैं कि 19वीं शताब्दी में महिलाओं की शिक्षा न के बराबर थी यानी कि सौ मे एक महिला भी पढ़ी लिखी नहीं होती थी। इस बात की झलक इस से मिल जाती है कि 1889 में जब महात्मा श्रद्धानन्द के प्रयत्नो ने जालन्धर मे कन्या महिला विद्यालय खोला जा रहा था तो वह विद्यालय हिन्दुओं के कटटर विरोध के कारण पांच बार खुला और बन्द हुआ। हिन्दु लोग अपनी बेटियों को पढ़ाने को तैयार नहीं थे। इस पतन के लिये हम मुगलों के शासन को दोष दे या फिर हमारे पण्डितों को जिन्होने शास्त्रों का हवाला दे कर यह ऐलान कर दिया हुआ था कि शास्त्रों की शिक्षा महिलाओं और शुद्रों के लिये निषेध है।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Bal Ashram children with
Mrs. Shashi Arya and Sudesh Seth

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

नरेन्द्र गुप्ता **लेखराम** (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.k d 63 o"k

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ftu egkuHkkoks us cky vkJe ds fy, nku fn;k

Gian Muni

Kishor Lal Soni

Sudershan Soni

Hardayal Mahajan

Bhagchand Verma

Hemanth Sharma

Pankaj Kapoor

Surbhi Gulshia

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870